

355 रकबा 0.1897 ई०, रक० नं० 361/350
 रकबा 0.0253 ई०; रक० नं० 374/352 रकबा
 0.0633 ई० रक० नं० 381/348 रकबा 0.2024 ई०
 कुल किरा 05 कुल रकबा 0.6957 ई० अर्थात्
 अर्थात् सातों गजा 173 व घुसजा 154 के ल०
 नं० 352/2 रकबा 0.3035 ई० में उम्माफको
 को विशेषित किया जाता है कि वह वरुके निर्णय
 तक अपने-अपने हिस्से में काममें रहे। किसी
 प्रकार का रक दूसरे के हिस्से में मजामत
 नाकरे ना किरी ले कावावे माही दवाय
 दावाली फरें तथा रिफाई लें, मोके की भथा
 स्थिति के नये रकें परावणी दन मकटल
 रक होकर केसल सुमार होकर दावाय दणाए



अरशीक नरार (आर.ए.एस.)
 सहायक कलेक्टर
 जयपुर शहर प्रथम